नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

गृह युद्ध के मुहाने पर खड़ा पाकिस्तान

पाकिस्तान इस समय एक ऐसे बहुस्तरीय संकट से गुजर रहा है, जिसकी जड़ें उसकी सत्ता संरचना, सैन्य वर्चस्व और जातीय विभाजनों में गहराई से धंसी हुई हैं. देश राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा मोर्चे पर एक साथ अस्थिरता झेल रहा है. लेकिन सबसे खतरनाक है, भीतर ही भीतर पनपता गृह-संघर्ष जो अब खुली बगावत में बदलता जा रहा है. पंजाब, खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान, तीनों ही क्षेत्र अपने-अपने तरीके से इस अस्थिरता की ज्वाला में जल रहे हैं. अप्रैल 2022 में इमरान खान की बेदखली के बाद पाकिस्तान की राजनीति ने जो करवट ली, उसने देश को पुनः लोकतांत्रिक रास्ते से भटका दिया.

इमरान खान की गिरफ्तारी और उनकी पार्टी पीटीआई पर प्रतिबंधों ने देश के मध्यवर्ग और युवाओं में असंतोष को गहराया. सड़कों पर प्रदर्शन, सोशल मीडिया पर विद्रोह और सेना के खिलाफ खुले आरोप, ये सब पाकिस्तान में पहले कभी इतने तीव्र रूप में नहीं देखे गए थे. यह असंतोष अब केवल सत्ता परिवर्तन की मांग तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सैन्य प्रतिष्ठान के वर्चस्व के खिलाफ जन-आक्रोश में बदल गया है.खैबर पख्तूनख्वा में स्थिति और भी भयावह है. अफगानिस्तान में तालिबान के पुनरुत्थान के बाद तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान ने अपने हमलों को कई गुना बढ़ा दिया है. पेशावर, बन्नू, मीर अली, स्वात, इन इलाकों में टीटीपी के हमले अब रोजमर्रा की बात हो गए हैं. पाकिस्तानी सेना की चौकियों पर हमले, पुलिस कर्मियों की हत्याएं, और सुरक्षा बलों पर आत्मघाती धमाके बताते हैं कि इस्लामाबाद का नियंत्रण इन इलाकों में अब नाममात्र का रह गया है. अफगानिस्तान के साथ डूरंड रेखा पर लगातार गोलीबारी और तनाव ने इस आग में घी का काम किया है.

दूसरी ओर बलूचिस्तान एक लंबे विद्रोह की तपिश झेल रहा है. दशकों से उपेक्षित बलोच जनता अपने संसाधनों पर अधिकार और राजनीतिक स्वायत्तता की मांग कर रही है. चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपेक) के तहत ग्वादर और अन्य परियोजनाओं में चीनी हितों की सुरक्षा के नाम पर पाकिस्तानी सेना ने बलोच इलाकों में कड़ी सैन्य कार्रवाई की है. परिणाम यह हुआ कि बलूच लिबरेशन आर्मी जैसे संगठन अब खुले तौर पर पाकिस्तानी सेना और चीनी ठिकानों को निशाना बना रहे हैं. हाल के महीनों में कई आत्मघाती हमलों और सैन्य ठिकानों पर हमलों ने बलूचिस्तान को लगभग अर्ध-युद्ध क्षेत्र बना दिया है.

इन सबके बीच पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था रसातल में जा चुकी है. विदेशी मुद्रा भंडार घट रहे हैं, महंगाई 30 प्रतिशत से ऊपर है, और बेरोजगारी ने लाखों युवाओं को निराशा के गर्त में धकेल दिया है. राजनीतिक अनिश्चितता और आतंकवादी गतिविधियों के कारण विदेशी निवेश ठप पड़ चुका है. आईएमएफ के कड़े शर्तों वाले ऋण ने राहत से ज्यादा बोझ बढ़ाया है.आज पाकिस्तान के भीतर जो दृश्य है, वह किसी भी विकसित राष्ट्र के लिए चेतावनी है. एक ऐसा देश जो कभी 'इस्लामी एकता' के नाम पर बना था, अब जातीय विभाजनों और सैन्य तानाशाही के बोझ तले टूट रहा है. पंजाब की सत्ता-संरचना से असंतुष्ट बलोच और पख्तून अब खुलकर अलगाव की मांग कर रहे हैं.

यदि यह सिलसिला यूं ही चलता रहा, तो पाकिस्तान में राजनीतिक सत्ता और सैन्य शक्ति के बीच संघर्ष केवल एक 'सत्ता संघर्ष' नहीं रहेगा, यह एक आंतरिक गृहयुद्ध में तब्दील हो सकता है. अफगान सीमा से लेकर बलूच पहाड़ियों तक उठते धुएं और पंजाब की सड़कों पर उतरते विरोधी जत्थे इसी आने वाले तूफान की आहट हैं.पाकिस्तान अब निर्णायक मोड़ पर है. या तो वह लोकतंत्र और संघीय संतुलन की ओर लौटेगा, या फिर अपने ही भीतर जलते विद्रोह की आग में राख हो जाएगा.

भारत ने एक बार फिर अपने संतुलित और मानवीय दृष्टिकोण से विश्व को चौंकाया

भारत की अफगान नीति : बदलती दुनिया को नया संदेश

डॉ. सुदीप शुक्ल

इन दिनों अपनी भारत यात्रा में अफगानी विदेश मंत्री अमीर खान मुत्तकी जिस तरह अच्छी हिन्दी और पश्तो में संवाद कर रहे हैं, उससे नई दिल्ली और काबुल के बीच संबंध और संवाद की गंभीरता का पता चलता है. मुत्तकी की यात्रा किसी अन्य देश के विदेश मंत्री की भारत यात्रा की तुलना में कहीं अधिक चर्चा में है और इसने दुनिया का ध्यान खींचा है. विदेशमंत्री मुत्तकी को मिले स्वागत और सम्मान ने कूटनीतिक विश्लेषकों को आश्चर्यचकित किया है. वहीं भारत की अफगान नीति बदलते विश्व को एक नया संदेश है.

काबुल दशकों से 'बड़े देशों' की शक्ति स्थापना की लालसा का केंद्र बिंदु रहा है. दोहा समझौते के बाद अमेरिकी सेनाओं की वापसी और पुन-तालिबान के सत्ता में आने पर जब पूरा विश्व असमंजस में था, तब भारत ने एक बार फिर अपने संतुलित और मानवीय दृष्टिकोण से विश्व को चौंकाया. भारत ने यह स्पष्ट कर दिया कि किसी भी देश की विदेश नीति केवल रणनीतिक हितों तक सीमित नहीं होती, बल्कि उसमें नैतिकता, संवाद और मानवता का गहरा स्थान भी है. मुत्तकी की भारत यात्रा ने इस नीति को नया आयाम दिया है. यह यात्रा महज़ औपचारिक शिष्टाचार का हिस्सा नहीं है, बल्कि दक्षिण एशिया में बदलते समीकरणों की दिशा तय करने वाली एक ऐतिहासिक घटना बन गई है. मुत्तकी को भारत आने की अनुमति संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की प्रतिबंध समिति से मिली, जो अपने-आप में यह संकेत था कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय अब अफगानिस्तान के साथ संवाद की संभावनाओं को पूरी तरह खारिज नहीं कर रहा. नई दिल्ली में उनके आगमन पर भारत के विदेश मंत्रालय ने भी स्पष्ट किया कि यह बातचीत अफगानिस्तान की जनता के हित, क्षेत्रीय सुरक्षा और मानवीय सहायता पर केंद्रित है. यह 'सत्ता से नहीं, जनता से संवाद' का वही दृष्टिकोण है जिसे भारत ने 2021 में तालिबान के सत्ता में आने के बाद अपनाया था!

भारत ने बीते दो दशकों में अफगानिस्तान में जिस स्तर का विकास कार्य किया, वह किसी भी सैन्य हस्तक्षेप से अधिक प्रभावी रहा. सलमा डैम, अफगान संसद भवन, ज़रांज-डेलाराम राजमार्ग जैसी परियोजनाओं ने न केवल अफगान जनता के जीवन स्तर को बदला, बल्कि भारत को वहाँ के लोगों के बीच गहरी स्वीकार्यता भी दिलाई. तालिबान शासन आने के बाद जब अधिकांश देशों ने अपने दूतावास बंद कर लिए तब भारत ने मानवीय सहायता का सिलसिला जारी रखा. खाद्यान्न, दवाइयाँ और कोविड-वैक्सीन भेजकर दिखाया कि कूटनीति का मूल उद्देश्य जनता का कल्याण है, सत्ता परिवर्तन का मूल्यांकन नहीं.

भारत ने अपनी विदेश नीति में यह संतुलन साधा है कि वह तालिबान को औपचारिक मान्यता दिए बिना भी संवाद और विकास के दरवाज़े खुले रखे. मुत्तकी की भारत यात्रा इस नीति की स्वाभाविक परिणति है. यह संकेत देती है कि दोनों देशों के बीच अब केवल आपातकालीन संवाद नहीं, बल्कि दीर्घकालिक साझेदारी की संभावना बनने लगी है. इस नीति ने न केवल दक्षिण एशिया में नई सोच को जन्म दिया है, बल्कि चीन और पाकिस्तान जैसे देशों के प्रभाव क्षेत्र में भी भारत को एक वैकल्पिक शक्ति के रूप में स्थापित किया है.जैसे-जैसे भारत और अफगानिस्तान के बीच संवाद का स्तर बढ़ रहा है, पाकिस्तान की बेचैनी भी बढ़ती जा रही है. पाकिस्तान लंबे समय से अफगान मामलों पर अपना प्रभाव बनाए रखना चाहता रहा है. उसके लिए तालिबान शासन हमेशा 'रणनीतिक गहराई' का प्रतीक रहा, किंतु अब वही तालिबान धीरे-धीरे अपने राजनीतिक क्षितिज को विस्तारित कर रहा है. पाकिस्तान को यह स्वीकार करना कठिन लग रहा है कि काबुल अब इस्लामाबाद की शर्तों पर नहीं, बल्कि अपनी स्वायत्त विदेश नीति के तहत कदम बढ़ा रहा है.

अफगान विदेश मंत्री की यह यात्रा केवल एक कूटनीतिक घटना नहीं, बल्कि एक ऐसे भारत की प्रतीक है जो अपनी 'शांत शक्ति' से विश्व राजनीति में सम्मान अर्जित कर रहा है. पाकिस्तान की नाराज़गी और चीन की शंकाओं के बावजूद भारत-अफगान रिश्तों का यह नया दौर दक्षिण एशिया में शांति और स्थिरता की दिशा में एक ठोस कदम है. भारत ने यह साबित किया है कि वह न तो किसी गुट में शामिल है, न ही किसी शक्ति का विरोधी, बल्कि वह अपनी स्वतंत्र नीति के बल पर एक ऐसा पुल बन रहा है जो संघर्ष और संवाद के बीच संतुलन कायम कर सकता है. यही है भारत की नई अफगान नीति का सार, जिसने दुनिया को यह नया संदेश दिया है कि आधुनिक कूटनीति का अर्थ अब शक्ति से अधिक, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी है.

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं)

जहां किलकारियां गूंजती थी

दिलीप झा

वहां अब पसरा है मातम

> इस बीच कांग्रेस मांग कर रही है कि सरकार को पूरे मामले की सीबीआई जांच करवानी चाहिए. इस बीच छिंदवाड़ा में कोल्ड्रिफ के होलसेलर पर साक्ष्य छिपाने का आरोप लगा है. खाद्य और औषधि प्रशासन विभाग ने पुलिस को एक रिपोर्ट सौंपी है जिसमें यह खुलासा हुआ है. बताया जा रहा है कि वह इस मामले का मुख्य आरोपी डॉक्टर प्रवीण सैनी का रिश्तेदार है. पूछताछ में आरोपी रंगनाथन का यह दावा चौंकाने वाला है कि 1400 बोतल देश के कई राज्यों में भेजी गई है और वहां से कोई शिकायत नहीं मिल रही है. जबकि इसी बैच की कोल्ड्रिफ की 660 बोतलें मध्य प्रदेश में सप्लाई हुई है तो यहां इतना जहरीला सिरफ कैसे बन गया,यह गहन तहकीकात का विषय सरकार और समाज के लोगों के लिए है.

मध्यप्रदेश में कोल्ड्रिफ कफ सिरप की दवा पीने से छिंदवाड़ा में 21 और बैतूल में दो बच्चों की मौत अंत्यंत दुखदाई है और इसके लिए न केवल राज्य सरकार का सिस्टम जिम्मेदार है बल्कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की कार्यशैली पर भी सवाल उठ रहे हैं. क्योंकि जिन घरों में बच्चों की किलकारियों की गूंज से परिजनों की नींद खुलती थी, आज वहां मातम पसरा है. 6 और बच्चों की हालत अभी भी गंभीर बनी हुई है.

यह हैरानी की बात है कि ज़हरीले सिरप से बच्चों की मौत के मामले में केंद्र और राज्य सरकार दोनों ने घटना के 15 दिनों बाद स्वीकार किया कि इस सिरप में कहीं कुछ गड़बड़ी है. 9 अक्टूबर को कोल्ड्रिफ कंपनी के निर्माता रंगनाथन को चेन्नई से गिरफ्तार छिंदवाड़ा लाया गया और एसआईटी ने उससे पूछताछ की. 12 अक्टूबर की देर शाम पुलिस उसे फिर तमिलनाडु लेकर गई और 13 को इस मामले में अचानक ईडी की एंट्री हुई. सूत्र बताते हैं कि जल्द सीबीआई भी इस मामले में दखल देगी. ईडी ने जानलेवा कफ सिरप बनाने वाली श्रीसन फार्मा पर हमेशा के लिए ताला जड़ दिया. तमिलनाडु सरकार ने भी कफ सिरप बनाने वाली कंपनी का लाइसेंस कैंसिल कर दिया. वहीं, 9 अक्टूबर को मुख्यमंत्री डाक्टर मोहन यादव ने नागपुर अस्पताल में उपचाराधीन बच्चों का हालचाल भी जाना और उनके परिजनों को आश्वस्त किया कि सारा खर्च सरकार देगी. लेकिन जिनका परिवार उजड़ गया, जिनकी खुशियों का गला घोंटा गया, वे पीड़ित परिवार किसे अपना दुखड़ा सुनाने, कहां जाएं, उन्हें समझ में नहीं आ रहा है.

कांग्रेस ने लगातार प्रदर्शन से सरकार को बैकफुट पर लाकर खड़ा कर दिया. छिंदवाड़ा में मुख्यमंत्री ने पीड़ित परिवारों को चार चार लाख की सहायता राशि देने की घोषणा करते हुए कहा कि जिन बच्चों का उपचार चल रहा है, सरकार उनके खर्च का वहन करेगी. जन-स्वास्थ्य को लेकर सरकार की प्राथमिकताएं सिस्टेमैटिक नहीं है. तभी इस तरह की घटनाओं को रोकने में सरकार सफल नहीं है. वहीं, इस तरह की घटनाएं सामने आने से डॉक्टर को भगवान कहने वाले लोगों का विश्वास डगमगाने लगता है. क्योंकि इन दिनों डॉक्टरों में नैतिक और चारित्रिक पतन पराकाष्ठा पर पहुंच गया है तभी वे चंद रुपयों के लिए ज़हरीले दवा भी रोगियों को लिख देते हैं. सरकार डॉक्टरों को तैयार करने में हर साल अरबों रुपये खर्च करती है फिर अच्छे डॉक्टर तैयार नहीं हो रहे हैं तो यह गहन चिंता की बात है.

स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार को बहुत योजनाबद्ध तरीके से काम करना होगा. वहीं, जन स्वास्थ्य को लेकर हवा- हवाई बात करने वाले नेताओं को यह भलीभांति समझना चाहिए कि जनता के हित के लिए बेहतर नीति निर्धारण उनका एजेंडा हो. कितनी अजीब बात है कि कफ सिरप से 23 बच्चों की मौत के 20 दिन बाद भारत सरकार ने फिनिश्ड दवाओं में डीआईजी और ईजी टेस्ट अनिवार्य किया है. यह पहले भी किया सकता था. दरअसल, हमारे यहां जब कोई बड़ी घटना होती है, तभी हमारा सिस्टम जागता है. चौतरफा घिरने के बाद राज्य सरकार द्वारा यह सुनिश्चित किया गया है कि अब कोई भी दवा तभी सरकारी अस्पतालों में उपलब्ध कराई जाएगी, जब उसके हर बैच की गुणवत्तापूर्ण जांच रिपोर्ट लैब से आ जाएगी. लेकिन इसके बावजूद सवाल अब भी वही है.

बाजार में मेडिकल स्टोरों पर बिकने वाली दवाओं की जांच का क्या होगा? उसके लिए केंद्र या राज्य सरकार द्वारा कोई प्रभावी व्यवस्था अब तक नहीं बनाई गई हैं. जबकि इस घटना के बाद सरकार को बाजार में अमानक दवाओं की बिक्री पर रोकथाम के लिए और ज्यादा कड़े कदम उठाने की आवश्यकता पर योजनाबद्ध तरीके से काम शुरू करना चाहिए. हमारे देश में दशकों से अमानक दवाओं की बिक्री का बहुत बड़ा षडयंत्र चल रहा है और समय समय पर इसका दुष्प्रभाव सामने आया है और सरकार की किरकिरी हुई है लेकिन इन सबके बावजूद घटिया दवा निर्माताओं पर शिकंजा नहीं कसा गया. हालांकि तमिलनाडु के दवा निर्माता रंगनाथन ने छिंदवाड़ा पुलिस को पूछताछ में अपने को निर्दोष बताया. लेकिन यह भी सच है कि हर अपराधी अपने को निर्दोष ही कहता है.

(लेखक नवभारत भोपाल के संपादक हैं)

खतरनाक तरीके से बढ़ रहे साइबर क्राइम

अनजान व्यक्ति का कॉल आने या उसकी बातों में फंसने से हर किसी को बचना चाहिए. साइबर ब्लैकमेलिंग भी एक बड़ी समस्या है जिसके लिए तुरंत पुलिस को सूचना देकर बचाव किया जा सकता है.

देश में इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ने के साथ साइबर फ्रॉड के मामलों में भी वृद्धि हुई है. नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो की रिपोर्ट के अनुसार ऐसे अपराधों में 31.2 प्रतिशत बढ़ोतरी हुई है. फरवरी 2025 में कुल 36.45 लाख रुपये की धोखाधड़ी के मामलों की नेशनल साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल पर रिपोर्ट दर्ज की गई थी. पुलिस अपने स्पेशल सेल के जरिए इस तरह के अपराधों से निपटने में लगी है. भारतीय रिजर्व बैंक भी जनहित में सूचना जारी कर लोगों को साइबर धोखाधड़ी से सतर्क रहने और किसी के बहकावे में आकर अपने अकाउंट नंबर और ओटीपी नंबर देने से बचने के प्रति आगाह करता है. इतने पर भी साइबर अपराधी नई-नई तकनीक का उपयोग कर लोगों को अपने जाल में फंसाते हैं. डिजिटल अरेस्ट के मामले भी बढ़ रहे हैं. अपराधी तत्व एआई जनरेटेड डीपफेक व फिशिंग स्कैम से लोगों को ठगी का शिकार बनाते हैं. वह इंटरनेट उपयोगकर्ता के व्यवहार पर निगाह रखते हैं. वह ई-मेल या मैसेज के जरिए लोगों के लालच का फायदा उठाते हुए उन्हें मुनाफा कमाने का ऑफर देते हैं और उनके बैंक खाते को खाली कर देते हैं. एक ओर तो सरकार डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन में लगी है ताकि लोगों की जिंदगी आसान हो जाए, वही दूसरी ओर साइबर धोखाधड़ी का खतरा भी बढ़ता जा रहा है. डिजिटलाइजेशन के युग में तकनीक हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है. डिजिटल बैंकिंग बढ़ गई है. यूपीआई पेमेंट में इजाफा हुआ है. जनजीवन में क्रांति आई है. सुविधाएं बढ़ी हैं. लोग घर बैठे ऑनलाइन खाने से लेकर परिधान तक हर चीज मंगा लेते हैं. इतने पर भी लोगों के लालच, भय, अज्ञान तथा भोलेपन का फायदा उठाते हुए साइबर अपराधी उनके साथ धोखाधड़ी करते हैं. इसके लिए डिजिटल साक्षरता व सजगता दोनों ही बढ़ानी पड़ेगी.

निशानेबाज

अपनी राजनीति का कड़वा सच नेता के मुंह में चांदी का चम्मच

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, विभिन्न पार्टियों में वंशवाद की राजनीति का बोलबाला है. नेता मुंह में चांदी का चम्मच लेकर पैदा हुआ करते हैं. क्या चांदी महंगी होने की यही वजह है?

हमने कहा, चांदी तो पूजीपतियों के मित्र नेताओं की सफेद दाढ़ी और मूछों में भी समाई हुई है. भारत में जब ब्रिक्स सम्मेलन हुआ था तो उसके सदस्य देशों के नेताओं को चांदी की थाली और कटोरियों में खाना खिलाया गया था.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, चांदी या सिल्वर का महत्व हमेशा से रहा है. ब्रिटिश शासनकाल में चांदी की चवन्नी, अठन्नी और रुपये के सिक्के चला करते थे. तब एक लोकगीत था- गंगा किनारे का मैं हूं किसनवा, खेतों में काम करूं सारे-सारे दिनवा, पाऊं चवन्नी चांदी की, जय बोलो महात्मा गांधी की! आज के जमाने में चवन्नी, अठन्नी गायब हो गई. रुपया भी स्टेनलेस स्टील का और बहुत छोटे आकार का हो गया है. त्योहार पर लोग जिन चांदी का वर्क चढ़ी मिठाइयों को खाते हैं, वह यह नहीं जानते कि वह चांदी नहीं, बल्कि एल्यूमिनियम की परत है, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है. खिलाड़ी सिल्वर मेडल जीतते हैं तो वह भी नकली चांदी का निकलता है. जब खिलाड़ी कड़की की हालत में मेडल बेचने निकलता है तो सराफे में इसका भंडाफोड़ होता है.

हमने कहा, पहले कुछ अच्छी फिल्में लगातार 25 सप्ताह चलकर सिल्वर जुबली या रजत जयंती मनाया करती थीं. तब थिएटर में मौजूद दर्शकों को मिठाई बांटी जाती थी. लोग अपनी शादी की 25वीं वर्षगांठ या सिल्वर जुबली बड़े उत्साह से मनाते हैं. तब यदि पत्नी के 2-4 बाल सफेद हो गए तो गाने लगते हैं- सोने जैसा रंग है तेरा, चांदी जैसे बाल, एक तू ही धनवान है गोरी, बाकी सब कंगाल!

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, चांदी की खदान कनाडा, अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, मेक्सिको, ऑस्ट्रेलिया और स्पेन में हैं. पुराने कैमरे में लगने वाली फिल्म बनाने में सिल्वर नाइट्रेट का इस्तेमाल किया जाता था. अब भी मोबाइल फोन या सेमीकंडक्टर चिप बनाने में चांदी का उपयोग होता है. इसलिए समझ जाइए कि चांदी क्यों इतनी महंगी हो रही है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12050 - डॉ. सागर खादीवाला

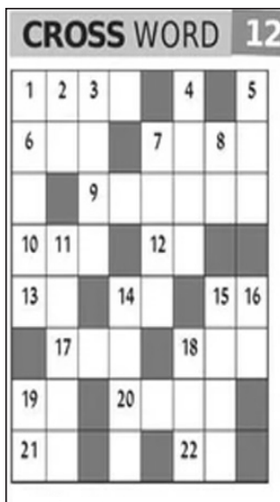

ऊपर से नीचे

1. पीकदान (उर्दू) 2. किसी कार्य विशेष के लिए भेजा हुआ आदमी, दूत, गुप्तचर 3. पितृपक्ष, श्राद्ध 4. वह स्त्री जिसका पति जीवित हो 5. तत्काल, तुरंत, तत्क्षण 7. नकली, कृत्रिम 8. पूंछ 11. चांदी या सोने का वरक बनाने वाला (उर्दू) 14. मिट्टी का तेल 15. अपरिचित, अनजान 16. एक-दूसरे के ऊपर लगी हुई परत, तह (सं) 18. किसी पद या किसी पद पर आरुढ़ होने के अधिकार से (एक्स ऑफिशियो) 19. ककड़ी

बाएं से दाएं

1. ऊंचा होना, उछलना, उछलकर लेना 6. निचोड़ना, पानी के साथ घिसना, नष्ट या बर्बाद करना 7. साहसी, शूरवीर, पराक्रमी 9. जाना और आना 10. बुलावा, भोज का निमंत्रण (उर्दू) 12. जंगल 13. पुरुष जाति का 14. दर्रा, दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता 15. लोप, नष्ट, तिरोहित 17. बिनौलों सहित रूई, रूई का पौधा 18. टपकने या चूने की क्रिया 19. जेब 20. आदान-प्रदान, विक्री का माल या रुपया देने या लेने का व्यवहार 21. रहस्य, गुप्त बात (उर्दू) 22. पैगंबर (उर्दू)

Solution 12049

कु	र	स	त		आ	कृ	ति
हा	य	र	स		व	त	न
र		ल		स	र		क
	वा	ता	व	र	ण		ना
ख	म		फा	का		पा	
लि		म	दा	री		य	क्ष
या	त्रा		री		सु	दा	मा
न	स	हा		उ	त	र	ना

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में राजनैतिक कार्यों में सफलता मिलेगी, नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा, वर्ष के मध्य में तीर्थ यात्रा या धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी, राज्य सम्मान मिलेगा, प्रभाव बना रहेगा, वर्ष के अन्त में पारिवारिक चिन्ता से मन विचलित रहेगा, कार्य क्षेत्र में आकस्मिक रूकावटें आयेंगी, धन संकट का सामना करना पडेंगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को राज्य सम्मान मिलेगा, प्रभाव में वृद्धि होगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को तीर्थ यात्रा या धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को धन संकट का सामना करना पडेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक चिन्ता से मन विचलित रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक परेशानी आ सकती है, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक कार्यों में सफलता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक शांतिप्रिय स्वाभाव का होगा, इनकी प्रगति नौकरी के माध्यम से होगी, माता पिता के भक्त होते हैं, धार्मिक आस्था रहती है, जन्म स्थान के पास ही उन्नति एवं भाग्योदय होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

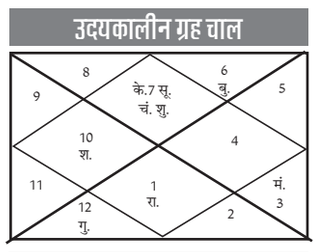

पंचांग

रा.मि. 23 संवत् 2082 कार्तिक कृष्ण नवमीं बुधवासरे दिन 2/44, पुष्य नक्षत्रे शाम 4/50, सिद्ध योगे दिन 9/52, गर करणे सू.उ. 6/16, सू.अ. 5/44, चन्द्रचार कर्क, शु.रा. 4, 6, 7, 10, 11, 2 अ.रा. 5, 8, 9, 12, 1, 3 शुभांक- 6, 8, 2.

व्यापार भविष्य

कार्तिक कृष्ण नवमीं को पुष्य नक्षत्र के प्रभाव से रूई, सूत, कपास, सन् जट, पाट, बारदाना आदि के भाव में घटबढ़ रहेगी, सोना, चांदी, के भाव मेंउतार चढ़ाव आयेगा, भाग्यांक 2508 है.

मेष- संतान संबंधी कोई सुखद समाचार मिलेगा, परिचितों का सहयोग रहेगा, उचित मार्गदर्शन मिलेगा, यश मिलेगा. सुख शांति बनी रहेगी.

वृषभ- व्यवसाय में सफलता हेतु नवीन प्रयास होंगे, पारिवारिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी, आरोग्य सुख बना रहेगा, लाभदायक काम बनेगा.

मिथुन- मन धनागम की युक्तयों की ओर केन्द्रित होगा, कार्यक्षेत्र में सहकर्मियों से मतभेद संभव है, आत्म विश्वास बना रहेगा, साहस बढ़ेगा.

कर्क- आलस्य का त्याग करें, जीवनसाथी का भावनात्मक सहयोग प्राप्त होगा, आकस्मिक यात्रा के योग बनेंगे, अनसोचे कार्य होने से सहयोग मिलेगा.

सिंह- मन पर नियंत्रण रखकर अपने कर्त्तव्यों के प्रति केन्द्रित हों, मन ढेर सारे पूर्वाग्रह से प्रभावित होगा, ज्ञात भय एवं चिन्ता दूर होगी, मित्रों का सहयोग रहेगा.

कन्या- कार्यों में विलंब होगा, कुछ नई सामाजिक व्यस्ततायें, सामने आयेंगी, महत्पूर्ण दायित्वों की पूर्ति होगी, मानसिक चिन्ता रहेगी, कार्यों की रूपरेखा बनेगी.

तुला- मानसिक संतुष्टि रहेगी, यश प्राप्त होगा, मनोरंजन के कार्यों में व्यय होगा, अचल संपत्ति क्रय पर विचार होगा, आर्थिक यात्रा का योग बनेगा.

वृश्चिक- धर्म एवं आध्यात्मिकता की ओर रूझान रहेगी, यश प्राप्त होगा, प्रियजनों का सहयोग बना रहेगा, नवीन कार्यों की पूर्ति होगी, माता पिता की चिन्ता होगी.

धनु- परिजनों के सुखद दुख से प्रभावित मन परिवार को एकजुट रखने में केन्द्रित होगा, स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें, व्यवसाय में अशांति हो सकती है.

मकर- मधुरवाणी से संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी. व्यवसायिक कार्यों में खर्च होगा, परिश्रम अधिक होगा, धार्मिक कार्यों के बनने का योग है.

कुम्भ- इच्छित कार्यों में सफलता मिलेगी, मनोरंजन एवं उत्सव आदि के कार्यों में खर्च होगा, आलस्य से बचना चाहिये, पुराना पैसा प्राप्त होगा.

मीन- भविष्य संबंधी कुछ चिन्तायें मन पर प्रभावी रहेंगी, अचल संपत्ति क्रय पर विचार होगा, जोखिम आदि से दूर रहेंगे, जल्दबाजी न करना हितकर रहेगा.

SUDOKU 7182

		6	4		5	8		
9				1				7
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
3				8				9
		8	6		9	5		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7181

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1